SJIF 2013 = 1.795
An International Peer Reviewed & Referred
Scholarly Research Journal for
Humanity Science & English Language

अज्ञेय के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन (नदी के द्वीप के विशेष संदर्भ में)

डॉ० विश्व प्रभा

वरिष्ठ एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,हिन्दी विभाग,डी०ए०वी०कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, यमुनानगर

वर्तमान उपन्यास साहित्य मनोविज्ञान के निकटतम होता जा रहा है । यह स्थूल घटनाओं की अपेक्षा मनोजगत् के रहस्यों का उद्घाटन तत्परता से कर रहा है । अत: मनोविज्ञान के प्रभाव ने उपन्यास को बाह्य जगत से हटाकर अन्तर्जगत में झांकने की प्रेरणा दी है तथा वर्तमान कलाकार व्यक्ति के अन्तस्तल में कारण रूप में विद्यमान मूल प्रवृतियों, संवेगों, मनोभावों आदि को प्रत्यक्ष करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य समझता है । यह मनोविज्ञान का ही प्रभाव है कि उपन्यासकार मनोविज्ञान की सहायता से पात्रों के क्रियाकलापों का अभ्यन्तर से सम्बन्ध स्थापित करते हैं क्योंकि मनोभावों का उत्थान—पतन तथा मानसिक प्रक्रियाएं कोई स्वतंत्रा सत्ता नहीं रखती। इसका अभिव्यक्तिकरण पात्रों के व्यवहारों के माध्यम से होता है और आलोचक मनोविज्ञान की सर्चलाइट के सहारे मन के अगम और अंध्कारमय स्थलों में प्रवेश करके वहां का रहस्य उद्घटित कर देता है तथा व्यवहार को संचालित करने वालों सूत्रों की खोज प्रकट कर देता है ।

मनोविज्ञान—अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

ज्ञान—विज्ञान के क्षेत्रा में जिन नयी शाखाओं का उद्भव हुआ उनमें मनोविज्ञान शीर्षस्थ है । कदाचित् ही किसी अन्य विद्या ने मनोविज्ञान के समक्ष मानव जीवन को बहुत दूर तक प्रभावित किया है । यूँ तो मानव ने जिस दिन से अपने मानसिक क्रियाकलापों को समझना शुरू किया होगा । उसी दिन से वह अनजाने में मनोवैज्ञानिक का कार्य करने लगा होगा ।

‘परन्तु मनोविज्ञान शब्द का प्रथम बार प्रयोग सत्राहवीं शताब्दी में ही हुआ ।’[1]

हिन्दी में मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी के साइकॉलोजी शब्द के समानार्थक एवं रूपान्तरित रूप में प्रयुक्त हुआ है । साइकॉलोजी ;च्ेलबीवसवहलद्ध शब्द की व्युत्पति लैटिन भाषा के दो शब्दों

1 Jean Piget Psychology (Article III) Main Trends in Research in the Social Science & Human Science, P. 229.

;चेलबीव.सवहवेद्ध से मिलकर हुई है । ;चेलबीमद्ध का अर्थ है ;वनसद्ध अथवा आत्मा और सवहवे का अर्थ—विचार—विमर्श ;अध्ययनद्ध होता है । अत: मनोविज्ञान का अर्थ हुआ—आत्मा का अध्ययन ;विज्ञानद्ध[2]

अत: मनोविज्ञान शब्द का कोषगत अर्थ हुआ मानव की आत्मा अथवा मन की प्रकृति, अनुभवों, इच्छाओं, मानसिक प्रकार्यों एवं परिदृश्यों का विज्ञान ।

आज का युग वैज्ञानिकता का युग है तथा मनोविज्ञान के स्वरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं । आज मनोविज्ञान मन, आत्मा व चेतना आदि के सीमित रूप में नहीं बल्कि 'व्यवहार' का वैज्ञानिक अध्ययन करता है । यह एक आदर्श व्यवहार व संतुलित समायोजित व्यवहार के सम्बन्ध में भी बताता है ।

कथ्य उपन्यास का प्राणतत्व है । मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में कथा की सर्वथा उपेक्षा नहीं की जाती और उनमें भी कथानक के दर्शन अवश्य होते है क्योंकि कथानक के अभाव में उनका निर्माण असम्भव है ।

'नदी के द्वीप' की कथावस्तु अत्यन्त संक्षिप्त एवं एकान्तिक है । इसमें संक्षिप्तता को घटना—क्रमों द्वारा विस्तार देने की ललक भी लेखक में नहीं रही । कथानक को जो विस्तार मिला है वह अर्न्तसंघर्ष आरोपित दार्शनिकता, तर्कबृ(और मनोविश्लेषण से मिला है । यही इस कृति की उपलब्ध्ि है । कथानक की संक्षिप्तता का आभास पाठकों को अन्त में ही हो पाता है और यही बात इस कृति की लघुकायिकता को विशिष्ट आयाम प्रदान करती है । वस्तुत: 'नदी के द्वीप' वस्तु की दृष्टि से जीवन की कथा नहीं, जीवन के अविस्मरणीय क्षणों की कथा है ।

सामान्यत: अज्ञेय के कथानकों का आधर व्यक्ति वैच्त्रियवाद है जिनमें विचित्रा व असाधरण व्यक्तियों की मानसिक उलझनों, द्वन्द्वों, प्रेरणाओं और प्रवृतियों की कहानी कहीं गई है । अतएव व्यक्ति वैच्त्रियवाद का आलम्बन करते हुए अज्ञेय ने नदी के द्वीप से भुवन और रेखा के प्रणय एवं आत्म सम्मोहन को कथा को आधर बनाया है साथ ही नियति के प्रबल थपेड़ो के आगे मानव की स्वप्नाकांक्षाओं की नि:सारता दिखाते हुए उन्होने व्यक्ति की विवशता की कहानी कही है । भुवन और रेखा की सुख—दुख भरी स्मृतियों और कोमल अनुभूतियों के ताने बाने से इसका संक्षिप्त कथानक रचा गया है ।

शेखर: की जीवनी की तरह ही यह उपन्यास चरित्रात्मक है घटनात्मक नहीं। पात्रों के चरित्रा भी यहां विकसित होते हुए नहीं दिखाए गये हैं, केवल उनका उद्घाटन भर किया गया है। जितनी घटनायें और कार्यव्यापार हैं, वे बाहर से नही, भीतर से जन्म लेते हैं और पात्रों की संवेदना किसी बाहरी दबाव की प्रतिक्रिया नहीं, स्वयंभूत, स्वत: स्फूर्त प्रकृति स्वरूप है । अत:

2 Everyman's Encyclopedia. Vol. X 4th Ed. J.M. Dent & Sons Ltd. London, 1958. P. 82

'नदी के द्वीप' की वस्तु का स्वरूप मानसी है जागतिक नहीं । यह उपन्यास जगत–जीवन के उत्कर्ष–अपकर्ष, संघर्ष–निष्कर्ष का निरूपण विश्लेषण नहीं वरन् प्रेम और पीड़ा का कलात्मक प्रदर्शन है । यहां यह कहना प्रसांगिक होगा कि अज्ञेय जी का जीवन विषयक दृष्टिकोण स्वाभाविक रूप से पात्राों के माध्यम से अथवा पात्राों के आचरण की परिणति के रूप में प्रकट हुआ है ।

'नदी के द्वीप' सरल रूप में कहें तो यह एक प्रेम कहानी है । रेखा भुवन और गौरा की प्रेमकथा, चन्द्रमाध्व बीच से है पर उसकी स्थिति कुछ–कुछ प्रतिनायक या नियति खलनायक जैसी है जो अन्त में मुंह की खाता है । प्रेम का त्रिाकोण – दो स्त्रिायाँ, एक पुरूष और उन्हें एक–दूसरे से जोड़ने वाली मन:स्थितियों और उनके बीच वक्र रेखा की तरह दिशाहीन भटकता हुआ चन्द्रमाध्व, बस यही तो 'नदी के द्वीप' का रेखाचित्रा है । नदी के द्वीप बकौल लेखक–मूलत: चार पाँच संवेदनाओं का अध्ययन है और यहाँ पात्राों के संवेदन की ध्ुरी पर ही कथा घूमती है । उस सुन्दर कलाकृति के कथ्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत करेंगे।

क.कथ्य और जीवन दर्शन :'नदी के द्वीप' उपन्यास के रचयिता अज्ञेय के जीवन दर्शन के सम्बन्ध् में विचार करते समय यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि स्वयं अज्ञेय के चिंतन पर फ्रायडीय मनोविज्ञान का गहरा प्रभाव पड़ा है । फ्रायड के मनोविज्ञान के अनुसार मानव आचरण की मूल प्रेरणायें है अहंता, भय और काम । मानव अपने जन्म के साथ ही इन तीन मूल प्रेरणाओं से शासित होने लगता है तथा इन्हीं से मानव जीवन को गति मिलती है । किन्तु व्यक्ति की मूल प्रेरणाओं को अध्कि मान्यता दिये जाने का फल यह हुआ कि समाज की तुलना में व्यक्ति को अध्कि महत्व दिया जाने लगा और फ्रायडीय मनोविज्ञान के मूलभूत सि(ान्तों से व्यक्तिवाद की उत्पत्ति हुई ।

अज्ञेय का जीवन दर्शन फ्रायड के व्यक्तिवादी चिन्तन से पूरा–पूरा प्रभावित है । समाज की अपेक्षा व्यक्ति के अहं की प्रतिष्ठा को वे सर्वोपरि मानते है । व्यक्ति की सत्ता के मुकाबले में उनके लिए सामाजिक संस्थाओं, परम्पराओं और पूर्वाग्रहों का तनिक भी महत्व नहीं । श्रीमती शची रानी गुर्टू ने अज्ञेय के चिन्तन पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि फ्व्यक्ति की अबाध् निरपेक्ष सत्ता है, जो किसी मर्यादा, मूल्य और नैतिकता की गिरफ्रत में नहीं रहती अपितु सर्वथा स्वतंत्रा और मुक्त है । कहना न होगा कि अज्ञेय का मनोविज्ञान प्रमुखतया फ्रायड से प्रभावित है बल्कि कहा तो यहां तक जा सकता है कि हिन्दी ;समग्रत:द्ध में अज्ञेय ही एकमात्रा ऐसे कलाकार है जिन्होंने फ्रायड की मान्यताओं को एक कलात्मक एवं साहित्यिक रूप में प्रतिष्ठित किया है ।

ख.व्यक्तिवाद की प्रतिष्ठा :'नदी के द्वीप' अज्ञेय की व्यक्तिवादी दृष्टि का अभिव्यक्तिकरण है । वस्तुत: अज्ञेय के सम्पूर्ण जीवन निष्कर्षों की जन्मभूमि उनकी व्यक्तिवादी विचारधरा की पक्षध्रता है । व्यक्तिवादी विचारधरा के समर्थक व्यक्ति की सत्ता को सर्वोपरि मानते हैं और निरंकुश मानते हैं

। 'नदी के द्वीप' के कथ्य के संदर्भ में अज्ञेय जी ने कहा है, ''नदी के द्वीप'' समाज के जीवन का चित्रा नहीं है, एक अंग के जीवन का है । पात्रा साधरण जन नहीं है, एक वर्ग के व्यक्ति है और वह वर्ग भी संख्या की दृष्टि से अप्रधन ही है, लेकिन कसौटी मेरी समझ में यह होनी चाहिए कि क्या वह जिस भी वर्ग का चित्राण है, उसका सीध चित्रा है ?[३] अपने इस कथन में संख्या की दृष्टि से अप्रधन वर्ग की बात मानकर अज्ञेय ने परोक्ष रूप से चरित्राों के विशिष्ट और व्यक्तिवादी होने की बात को मान लिया है ।

'नदी के द्वीप' को हम मूलत: शिक्षित बु(िवादी तथा अपनी केंचुल में सिमटे हुए एकान्तिक वर्ग की प्रणय गाथा कह सकते है । उपन्यास में भुवन और रेखा के व्यक्तित्व विशेष रूप से इसी व्यक्तिवादी आधर पर खड़े किये गये है ।

वस्तुत: उपन्यासकार अज्ञेय का मूल लक्ष्य मानव के स्वतंत्रा व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा करना है क्योंकि स्वातंत्राय में ही व्यक्तित्व की सार्थकता भी सि(होती है और 'नदी के द्वीप' शीर्षक भी व्यक्ति की प्रतिष्ठा को ही अभिव्यक्ति देता है ।

''नदी के द्वीप'' की नायिका रेखा पहले परिच्छेद में ही स्पष्ट रूप से कहती है— मैं तो समझती हूँ हम अध्कि से अध्कि इस प्रवाह में छोटे—छोटे द्वीप हैं इस प्रवाह से घिरे हुए भी उससे कहें हुए भी — न जाने कब प्रवाह की एक स्वैरिणी लहर आकर मिटा दे, बहा ले जाए, फिर चाहे द्वीप का फूल—पत्ते का आच्छादन कितना ही सुन्दर क्यों न रहा हो ।[४]

रेखा का उपरोक्त चिन्तन 'नदी के द्वीप' के माध्यम से जीवन रूपी सागर में व्यक्ति रूपी द्वीप के महत्व को दर्शाता हुआ व्यक्तिवादिता को ही उजागर करता है । यही नही नायक भुवन तथा गौरा भी रेखा के नाम लिखे पत्रा में यही विचार प्रकट करते हैं ।

वस्तुत: इस प्रकार के उद्‌गारों की 'नदी के द्वीप' में अनेक बार आवृति कर उपन्यासकार ने अपनी इस मनोभावना को स्पष्ट किया है कि चाहे समाज या जन प्रवाह में उनके व्यक्तित्व रूपी द्वीपों का अस्तित्व बहे या मिट ही क्यों न जाएं और स्थिति चाहे कितनी ही विकट क्यों न हो तो भी वे यथासम्भव अपने स्वतंत्रा अस्तित्व को बनाए रखने का प्रयत्न करेंगें ।

उदाहरण के रूप में अज्ञेय के 'नदी के द्वीप' की चरित्रा नायिका रेखा प्रेम और विवाह जैसे महत्वपूर्ण विषयों में समाज का हस्तक्षेप सहने को तनिक भी तैयार नहीं उसका चिन्तन है कि मेरे कर्म का—सामाजिक व्यवहार का नियमन समाज करे, ठीक है । मेरे अंतरंग जीवन का नहीं, वह मेरा है । मेरा यानी हर व्यक्ति का निजी''।[५] विवाह के संदर्भ में गौरा को पत्रा लिखते हुए भुवन का यह कथन व्यक्तिवादी दृष्टि का ही पोषण करता है, कोई किसी के जीवन का निर्देशन करें,

---

3 vKs;] vkReusin i`0 73

4 unh ds }hi i`0 22

5 ogha] i`0 138

यह में सदा से गलत मानता आया हूँ तुम जानती हो दिशा निर्देशन भीतर का आलोक ही कर सकता है़ वही स्वाधीन नैतिक जीवन है, बाकी सब गुलामी है ।[6]

गौरा के समक्ष विवाह प्रस्ताव आने पर वह जब भुवन से सलाह माँगती है तो भुवन उसे अपनी ओर से कोई निर्णय न सुना उसे स्वयं की अन्र्तात्मा से की आवाज़ सुन निर्णय लेने की ही राय देता है । इस प्रकार गहराई से देखें तो अज्ञेय के व्यक्तित्व की खोज का अर्थ स्वातन्त्राय की ही खोज है :–

‘‘अपनी हर साँस के साथ
पनपते इस विश्वास के साथ
कि हर दूसरे की हर साँस को
हम दिला सकेंगे और अध्कि सहजता
अनाकुल, उन्मुक्ति और गहरा उल्लास’’[7]

यहाँ यह स्पष्ट कर देना जरूरी होगा कि अज्ञेय का व्यक्तिवाद ‘‘अहम्वाद’’ से अलग है । अज्ञेय का आदर्श है कुण्ठारहित इकाई । वे जीवन को बूंद की संज्ञा नहीं देते । परन्तु बूंद के महत्व को समझते हैं । यही कारण है कि पंक्ति को समर्पित होते हुए भी ‘निजता’ की सुरक्षा रखते हैं । यही उपन्यासकार अज्ञेय ने ‘नदी के द्वीप’ में भुवन रेखा और गौरा नामक तीनों प्रमुख पात्राों द्वारा मनसा वाचा–कर्मणा व्यक्तिवादी जीवन–दर्शन को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है । व्यक्तिवाद में उनकी पहले से ही दृढ़ आस्था रही है यह ‘नदी के द्वीप’ शीर्षक कविता में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है –

हम नदी के द्वीप है
हम नही कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाए
वह हमे आकार देती है

....

माँ है वह । इसी से हम बने है ।[8]

इन पंक्तियों में भी समाज रूपी नदी के प्रति समर्पण के भाव के साथ–साथ द्वीप रूप में निज की अस्मिता अस्तित्व की स्वीकृति का भाव ही मुखर है ।

ख.क्षणवाद :– क्षणवादी दर्शन के अन्तर्गत यह माना गया है कि काल–प्रवाह क्षणों का योगफल है । अत: क्षणों का महत्व स्वीकार किया जाना चाहिये । क्षण के महत्व को स्वीकार करना और उसी में जीने की आकांक्षा ही वास्तविक और सत्य जीवन है तथा क्षणवादी को भविष्य के

6 unh ds }hi i`0 73
7 vKs;] fdruh ukoksa esa fdruh ckj i`0 31
8 gjh ?kkl ij {k.k Hkj i`0 38

अस्तित्व पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है । प्रत्येक जीवित क्षण वर्तमान बनकर सामने आता है, वही सत्य है, शेष सब मिथ्या है । व्यक्ति क्षणों में ही उत्तेजित और तृप्त होता है और क्षणों का सूक्ष्म रूप ही सत्य की अनुभूति को व्यक्त करता है तथा सत्य की अनुभूति का क्षण ही व्यक्ति की मुक्ति का क्षण है । क्षण के प्रति जो आग्रह अज्ञेय में प्राप्त होता है वह जीने का ही आग्रह है–जिजीविषा है । क्षणवाद का कोई स्वतंत्रा दर्शन अज्ञेय में नही । क्षण का आग्रह मात्रा इसलिए है कि लेखक इस कुण्ठित सभ्यता के बीच क्षण भर की छूट माँग लेना चाहता है । उस क्षण के आग्रह के पीछे वर्तमान को भोगने की तीव्र लालसा है । नदी के द्वीप उपन्यास में रेखा के माध्यम से इसी क्षणवाद के महत्व को प्रतिष्ठा मिली है । क्षण की इसी महत्ता को मानकर चलने की प्रवृति उसमें भविष्य के प्रति अनास्था को जन्म देती है । उपन्यास में एक स्थान पर रेखा कहती है– ''मैने भविष्य मानना ही छोड़ दिया है । भविष्य है ही नहीं, एक निरन्तर विकासमान वर्तमान ही सब कुछ है । आपने कभी पानी के फव्वारे पर टिकी हुई गेंद देखी है? बस जीवन वैसा ही है, क्षणों की धरा पर उछलता हुआ–जब तक धरा है, तब तक बिल्कुल सुरक्षित, सुस्थापित, नहीं तो पानी पर टिके होने से अध्कि बेपाया क्या चीज होगी?॰९ यहां रेखा द्वारा क्षणवादी भावना में आस्था अभिव्यक्त हुई है ।

डॉ देवेश ठाकुर के मतानुसार ''नदी के द्वीप'' का प्रतीक व्यक्ति और क्षण दोनों के लिए प्रयुक्त हुआ है ।१०

स्पष्ट है समाज में व्यक्ति भी महत्वपूर्ण है और समय प्रवाह में क्षण भी । इसीलिए रेखा कहती है – हमीं द्वीप है, मानवता के सागर में व्यक्तित्व के छोटे–छोटे द्वीप, और प्रत्येक क्षण का एक द्वीप है–खासकर व्यक्ति और व्यक्ति के सम्पर्क का, कांटेक्ट का, प्रत्येक क्षण–उपस्थित अपरिचय के महासागर में एक छोटा किन्तु कितना मूल्यवान द्वीप ।''११

नदी के द्वीप में रेखा के चरित्रा निर्माण में अज्ञेय की व्यक्तिवादी और क्षणवादी निष्ठा की समन्विति हुई है । भुवन को लिखे पत्रा में एक स्थान पर रेखा कहती है –

फ्हम जीवन की नदी के अलग–अलग द्वीप है– ऐसे द्वीप स्थिर नहीं होते, नदी निरन्तर उनका भाग्य गढ़ती चलती है, द्वीप अलग–अलग होकर भी निरन्तर घुलते और पुनः बनते रहते हैं .... एक स्थान से मिटकर दूसरे स्थान पर जमते हुए नये द्वीप ।१२ यहाँ स्पष्ट है कि क्षण की उस भावानुभूति का आधर यही जीवन है । इस जीवन से आगे कुछ नहीं, यही सम्पूर्ण है । यही अन्त है, व्यक्ति का अन्तर, जीवन में जब चरम तृप्ति का अनुभव करता है, वह क्षण उसे

9 unh ds }hi i`0 50
10 MkW nsos'k Bkdqj] unh ds }hi dh jpuk çfØ;k i`0 66
11 unh ds }hi i`0 110
12 ogha] i`- 315

स्पृहणीय है । नदी के द्वीप में रेखा ऐसे ही अनुभूतिपूर्ण क्षणों के प्रति समर्पित है । लखनऊ में काफी हाऊस में भुवन से पहली मुलाकात से लेकर तुलियन में प्रेम के चरम क्षण तक रेखा अनेक दीप्त क्षणों को भोगती है और इस बीच कभी भी उसका अतीत या भविष्य उसे डरा नहीं पाता । कोई नैतिक मूल्य, कोई पाप—भावना, कोई असुरक्षा की चिन्ता, कोई लोकापवाद उसे कुण्ठित नहीं करता । बिल्कुल सहज, उन्मुक्त भाव से वह वर्तमान को भोगती है ।

कह सकते है कि अज्ञेय ने 'नदी के द्वीप' के कथ्य में क्षणवाद को अत्यन्त महत्व प्रदान किया है ।

३.**आत्मपीड़ा अथवा वेदना का स्वर :** अज्ञेय लेखन में सर्वत्रा दर्द व आत्म—पीड़न का स्वर है जिसका सम्बन्ध वह यौन वर्जनाओं से मानते हैं —

साँस का पुतला हूँ मैं,
जरा से बंध हूँ और
मरण को दे दिया गया हूँ
पर एक जो प्यार है न उसी के द्वारा
जीवन—मुक्त में किया गया हूँ ।[१३]

अज्ञेय में यदि कोई दु:खवाद है तो वह भी इसी मुक्ति के लिए है क्योंकि प्रस्तुत उपन्यास 'नदी के द्वीप' का नायक भुवन इस पीड़ा के द्वारा ''मुक्ति'' प्राप्त करने की चेष्टा करता है ।

'नदी के द्वीप' वस्तुत: एक प्रेम उपन्यास है । इसमें व्यक्त प्रणय की संवेदना को जीवन्त प्राणवान तथा परिपक्व बनाती है — आन्तरिक वेदना अथवा पीड़ा । उपन्यासकार ने इसे सर्जनात्मक ऊर्जा तथा तत्व के रूप में स्वीकार किया है । अपने उपन्यास शेखर : एक जीवनी की भूमिका में उन्होनें वेदना को शक्ति के रूप में प्रयुक्त किया है— वेदना में एक शक्ति है, जो दृष्टि देती है । जो यातना में है वह द्रष्टा हो सकता है ।[१४]

वस्तुत: अज्ञेय का विद्रोही व्यक्तिवाद दु:खवाद का साथी बन गया है और उन्होंने ''नदी के द्वीप'' में पीड़ा या दु:ख के स्वत:वरण के दर्शन को प्रस्तुत किया है । इस पीड़ावाद के महत्व को बढ़ाने के लिए 'दु:ख सबको मांजता है' इस सूत्रा की पुष्टि उपन्यास का उद्देश्य है । स्वयं अज्ञेय जी ने उपन्यास के बिल्कुल आरम्भ में 'पहला दोगरा' कविता का अंश देकर अपने दु:ख के स्थापत्य को इन शब्दों में संवारा है ।

दु:ख सबको माँजता है
और ....

---

13 vKs;] vk¡xu ds ij }kj i`0 36

14 vKs; ¶'ks[kj% ,d thouh¸ Hkwfedk Hkkx 1] i`0 7

चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने,

किन्तु जिनको माँजता है ।

उन्हें यह सीख देता है कि सबकों मुक्त रखे ।

इस कविता से दो बातें स्पष्ट हो जाती है । पहली यह कि उपन्यासकार यह मानता है कि दुःख द्वारा व्यक्ति का परिष्कार होता है और दूसरी यह है ऐसा व्यक्ति सबको मुक्त रखने के सि(ान्त में विश्वास करता है ।

इनमें से प्रथम तथ्य के सम्बन्ध् में यह कहा जा सकता है कि उपन्यासकार ने भुवन के द्वारा गौरा के नाम लिखे गए एक पत्रा में रेखा के विषय में कहलवाया है—'तुम उन्हें देखती तो अवश्य प्रभावित होती — एक स्वाधीन व्यक्ति जिसका व्यक्तित्व प्रतिभा के सहज तेज से नहीं, दुःख की आँच से निखरा है । दुःख तोड़ता भी है पर जब नहीं तोड़ता या तोड़ पाता तब व्यक्ति को मुक्त करता है । 'ऐसा हो कुछ मुझे उनमें लगा ।'[१५]

<u>''शेखर एक जीवनी''</u> में शेखर का प्रमुख लक्ष्य या स्वतंत्राता जबकि ष्नदी के द्वीपष् का लक्ष्य है: मुक्ति । यही कारण है कि रेखा के चरित्रा में प्रेम बंध्न का नहीं—मुक्ति का काम करता है । रेखा ने बार—बार 'वेदना के महत्व' को समझा बूझा, स्वीकारा और आत्मसात किया है । यह वेदना यह दर्द ही रेखा के व्यक्तित्व में रचपच गया है । इसी दर्द ने उसे इतना माँजा है कि अपने हृदयपुर के महाराज भुवन को बिना कोई आघात दिये ईर्ष्या विमुक्त प्यार देती हुई गौरा को सौंप देती है । उसका यह परिपक्व प्रेमादर्श कोरा सै(ान्तिक नही है, यह दर्द से जन्मा ऐसा यथार्थ है जिसे सामान्य मनोविज्ञान की दृष्टि से पकड़ पाना मुश्किल है । दर्द कैसे व्यक्तित्व को माँजता है, माँजने का अर्थ क्या है और कैसे व्यक्ति उससे सबको मुक्त रखना सीखता है । इसकी जीवन्त प्रतिमूर्ति है रेखा ।

'नदी के द्वीप' उपन्यास के तीनों प्रमुख पात्रा रेखा, भुवन और गौरा हमे दुःखपूजा के सि(ान्त की उपासना करते हुए जान पड़ते हैं । किन्तु सबसे अध्कि सशक्त पात्रा रेखा है जो हमारे समाज के अमानवीय नीति विधन के विरू(तीखे किन्तु ऊपर से शांत विद्रोह की मूर्ति है । निसंदेह यह पात्रा हमारी प्रचलित नैतिक मर्यादाओं की दृष्टि से चौकाने वाला है फिर भी कुण्ठाऐं उसमें प्रायः नहीं हैं वह समाज को अप्रसांगिक तो नहीं मानती पर उसे निर्णायक भी नहीं बनाना चाहती ।

अज्ञेय की मान्यता है कि चरम वेदना एवं अनुभूति के क्षणों में व्यक्ति अकेला होता है । उपन्यास की नायिका रेखा के द्वारा बार—बार इसका उद्घोष हुआ है । वह इस कथ्य को स्वयं जीकर स्वयं भोग कर इस निर्णय पर पहुंची है । इस प्रकार वह विभिन्न विरोधी परिस्थितियों में प्रेम

15 unh ds }hi i`0 90

के कष्ट को तीव्र ढंग से अपनाना चाहती है । प्यार की आग में सुवर्ण के समान तपना चाहती है ताकि अध्कि से अध्कि कष्टतर होते—होते पवित्रातम स्वच्छ, निर्मल बनता जाएं ।

यदि हम तीनों पात्राों की चारित्रिाक विशेषताओं का अनुशीलन करें तो स्पष्ट होता है कि उन्हें स्वेच्छा से दुःख को वरण करना प्रिय है और दुःख ही उनके व्यक्तित्व में निखार लाने में सहायक जान पड़ता है । लगता है 'नदी के द्वीप' के पात्रा नदी के द्वीप होने की नियति को चित्रिात करने के लिए लाए गए हैं । नदी के द्वीप में आधुनिक मनुष्य के व्यक्तित्व का नया आयाम प्रस्तुत किया गया है । आज जबकि मनुष्य में प्रायः कुण्ठा, तनाव और बिखराव का प्राधन्य हो गया है । यह मनःस्थिति मुख्यतः मध्यम वर्ग की है अज्ञेय के उपन्यास नवीन जीवन दृष्टि प्रस्तुत करते हैं । मध्यवर्ग के पात्रा अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए परिवार, समाज और देश से लड़ते हैं पर असफल रहते है किन्तु अज्ञेय के मध्यवर्गीय पात्रा हारते हैं खीझते हैं, लेकिन समाज की मान्यताओं के आगे झुकते नहीं और यह उनकी बहुत बड़ी सफलता है । व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि का समावेश होने के कारण अज्ञेय ने मध्यवर्ग के ऐसे पात्राों की सृष्टि की है जो समाज से अध्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रमुखता देते है और यही अज्ञेय के उपन्यासों का मूल स्वर है ।

सत्य तो यही है कि अज्ञेय ने पात्राों की व्यक्तिगत समस्याओं तक 'नदी के द्वीप' को सीमित रखा है । उनके सभी पात्रा आर्थिक समस्याओं से मुक्त है । केवल प्रेम और विवाह की समस्या ही उनके जीवन में प्रधन है तथा उनके माध्यम से मध्यवर्ग की प्रेम, विवाह, सैक्स, कुंठा, प्रर्दशन तथा हीनता की समस्याओं को उपन्यासकार ने दिखाने का प्रयास किया है ।

नदी के द्वीप का नायक भुवन गम्भीर, विचारशील, शिष्ट, भावुक, एकान्तप्रिय तथा असामाजिक व्यक्ति है । उसके जीवन में न तो प्रेम की समस्या है और न विवाह की, केवल दोनों के संघर्ष से उत्पन्न अन्तर्द्वन्द्व की समस्या है । डॉ सुषमा ध्वन के अनुसार, फसि(ान्त रूप में यह स्वीकार करते हुए भी कि व्यक्ति की जड़े घरों में नहीं होती, समाज जीवन में होती है, उसका समाज रेखा और गौरा तक सीमित है ।[16]

जहाँ रेखा के वैचित्रयापूर्ण व्यक्तित्व का चित्राण करता हुआ भुवन कहता है ....'पर वैसे अत्यन्त रूपवती है और उसका एक—एक सप्राण तेजोमय पर्सनेलिटी के प्रकाश से भीतर से दीप्त है, भले ही एक बड़ा रिजर्व उस प्रकाश को भी घेरे है ।[17] यहाँ रेखा का अर्न्तमुखी व्यक्तित्व स्पष्ट उजागर हो रहा है । इसी गौरा भुवन के जीवन में आने वाली दूसरी स्त्राी है, फभुवन मास्टर साहबय 'भुवन दा' के प्रति उसका आदरभाव कैसे क्रमशः सख्य और

16 MkW0 lq"kek /ou] fgUnh miU;kl i`0 239
17 unh ds }hi i`0 44

प्रेमभाव में परिणत हो जाता है, उसका प्रेम एकान्त सर्मपण, आत्मदान, प्रिय में सम्पूर्ण विलयन का प्रतिनिध्त्वि करता है तथा अन्ततः उसकी प्रेम प्रक्रिया भुवन को पाने में सफल हो जाती है ।

'नदी के द्वीप' में मध्यवर्ग की अधिकांश समस्याएं गौण पात्रा चन्द्रमाध्व के माध्यम से वर्णित हुई है । चन्द्रमाध्व वैवाहिक जीवन के उत्तरदायित्वों के प्रति अनुदार ही रहता है और उसके व्यक्तित्व में उच्छृंखलता कामोत्तेजना कुंठा एवं घुटन ही विशेष रूप से होने के कारण वह अपनी सीधी सरल पत्नी से संतुष्ट नहीं होता । वह एक मध्यवर्गीय असन्तुष्ट प्रवृति के व्यक्ति का प्रतिनिध्त्वि करता है । कह सकते है नदी के द्वीप में मध्यवर्ग की केवल प्रेम और विवाह की समस्याओं के साथ मानसिक अन्तर्द्वन्द्व, कुंठा, घुटन और लाचारी अध्कि व्यक्त हुई है ।